रामलाल कपूर ट्रस्ट
द्वारा
प्रकाशित और प्रसारित ग्रन्थ

वेद–विषयक ग्रन्थ

१. **ऋग्वेदभाष्य**– (संस्कृत, हिन्दी; प्रथमभाग ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित) प्रतिभाग सहस्राधिक टिप्पणियाँ, १०–११ प्रकार के परिशिष्ट व सूचियाँ भी दी गईं हैं। अत्यन्त शुद्ध संस्करण बढ़िया कागज और छपाईयुक्त– अप्राप्य

२. **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**–सम्पादक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। शतशः टिप्पणियों से युक्त– १००.००

३. **भूमिकाभास्कर**– स्वामी विद्यानन्द सरस्वती –दो भागों में पूर्ण–
प्रथमभाग ३००.००, द्वितीयभाग २००.००

४. **ऋग्वेदानुक्रमणी**– वेङ्कटमाधवकृत– इस ग्रन्थ में स्वर, छन्द आदि आठ वैदिक विषयों पर गम्भीर विचार किया गया है। प्रत्येक वेदार्थ के जिज्ञासु के लिए यह ग्रन्थ परम उपयोगी है।
व्याख्याकार– श्री डॉ॰ विजयपाल जी विद्यावारिधि।– ५०.००

५. **कात्यायनीया ऋक्सर्वानुक्रणी**–(ऋग्वेदीया)– षड्गुरुशिष्य विरचित संस्कृत टीका सहित। इसमें ऋग्वेद के प्रतिमन्त्र ऋषि, देवता और छन्दों का संकलन है। इस संस्करण में टीका का पूरा पाठ प्रथम बार छापा गया है। विस्तत भूमिका और अनेक परिशिष्टों से युक्त। बढ़िया छपाई, सुनहरी जिल्द। १५०.००

६. **ऋग्वेद की ऋक्संख्या**–(संस्कृत, हिन्दी)– लेखक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें ऋग्वेद की विविध विद्वानों द्वारा दर्शाई गई मन्त्रसंख्या की समालोचना और शुद्ध वास्तविक मन्त्रसंख्या दर्शाई गई है। ५.००

७. **ऋग्वेदपरिचय**– श्री पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्त्तण्ड। ऋग्वेद का परिचयात्मक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ। २५.००

८. **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका–परिशिष्ट**– भूमिका पर किए गए आक्षेपों के ग्रन्थकार द्वारा दिये गए उत्तर। ५.००

९. **यजुर्वेदभाष्य–विवरण**– ऋषि दयानन्द कृत भाष्य पर पं॰ ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत विवरण। इसमें ऋषि दयानन्द के भाष्य का शुद्ध पाठ औरउसकी पुष्टि में प्रतिमन्त्र प्रमाण दिये गए हैं। मन्त्रों के पदों की सस्वर व्याकरण प्रक्रिया लिखी गई है। अप्राप्य

१०. **माध्यन्दिनपदपाठः**–(यजुर्वेद–पदपाठ)– २००.००

११. **तैत्तिरीयसंहिता**–(मूलमात्र)– मन्त्रसूचीसहित १२०.००

१२. **तैत्तिरीय–संहिता–पदपाठः**– दाक्षिणात्यपाठानुसारी। बहद् आकार में। पष्ठ संख्या–६७०। १८०.००

१३. **तैत्तिरीय प्रातिशाख्य** (मूल) २०.००

१४. **अथर्ववेदभाष्य**–पं० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय कृत। १–३ काण्ड १००.००, ४–५ काण्ड १००.००, ६ काण्ड १००.००, ७–८ काण्ड १००.००, ९–१० काण्ड १००.००, ११–१३ काण्ड १००.००, १४–१७ काण्ड १००.००, १८–१९ काण्ड १००.००, २०वाँ काण्ड १००.००

१५. **अथर्ववेदीय–दन्त्योष्ठ्यविधि**– अर्थात् अथर्ववेद का चतुर्थ लक्षणग्रन्थ– भूमिका तथा टिप्पणी युक्त आर्यभाषानुवाद सहित– सम्पादक– पं॰ रामगोपाल शास्त्री। ५.००

१६. **अथर्ववेदीया बहत्सर्वानुक्रमणिका**– भूमिका तथा सूचियों सहित– सम्पादक– पं॰ रामगोपाल शास्त्री। ६०.००

१७. **गोपथब्राह्मण** (मूल) सं॰– डॉ॰ विजयपाल जी विद्यावारिधि। सभी संस्करणों में अधिक शुद्ध और सुन्दर संस्करण। ८०.००

१८. **वैदिक–निघण्टु–संग्रह**– सं॰– डॉ॰ धर्मवीर विद्यावारिधि। इसमें कौत्सव्य और यास्कीय निघण्टु के साथ भास्कर राय विरचित **वैदिक कोश,** वेंकट माधव कृत **आख्यातानुक्रमणी** और **नामानुक्रमणी** भी हैं। १००.००

१९. **वैदिक–सिद्धान्त–मीमांसा**–(प्रथमभाग)– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा लिखित १६ वेदविषयक निबन्धों का अपूर्व संग्रह। ७५.००

२०. **वैदिक–सिद्धान्त–मीमांसा**–(द्वितीयभाग)– पं॰ युधिष्ठिर मी॰ द्वारा विभिन्न समयों में लिखित वेदांगादि विषयक निबन्धों का संग्रह। १००.००

२१. **वैदिक–साहित्य–सौदामिनी**– स्व॰ श्री पं॰ वागीश्वर वेदालंकार कृत काव्यप्रकाश, साहित्यदर्पण आदि के समान वैदिक साहित्य पर शास्त्रीय विवेचनात्मक ग्रन्थ। ७०.००

२२. **वेद–श्रुति–आम्नाय–संज्ञामीमांसा**– (संस्कृत, हिन्दी)– लेखक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें सप्रमाण दर्शाया गया है कि मन्त्रों की ही वेद संज्ञा है। ब्राह्मग्रन्थों में वेद–श्रुति–आम्नाय–संज्ञा पारिभाषिक और केवल यज्ञीय प्रकरण तक ही सीमित है। ५.००

२३. **वैदिक–छन्दोमीमांसा**– लेखक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। वैदिक छन्दःशास्त्र सम्बन्धी पाँच प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर प्रत्येक छन्द के भेद–प्रभेद और उदाहरण दिये हैं। १००.००

२४. **वैदिक–स्वरमीमांसा**– लेखक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। वेद में प्रयुक्त उदात्तादि स्वरों का विस्तत विवेचन किया गया है। स्वर–शास्त्र के अज्ञान के कारण होने वाली भूलों का निदर्शन एवं स्वरभेद से होने वाले अर्थभेद को दर्शाया है। ६०.००

२५. **वेदार्थ–भूमिका(**हिन्दी)– स्वा० विद्यानन्द सरस्वती। २५.०० २६. **वेदार्थ–भूमिका(**संस्कृत)– स्वा० विद्यानन्द सरस्वती। ३०.०० २७. **वेदार्थ–भूमिका(**संस्कृत–हिन्दी)– स्वा० विद्यानन्द सरस्वती।५०.०० २८. **वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त विविध स्वरांकन प्रकार**–लेखक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। १२.००

२९. **यजुर्वेद–भाष्य–संग्रह तथा अपाणिनीयपदविमर्श**। ३०.००

३०. **वेदों का महत्त्व तथा उनके प्रचार के उपाय, वेदार्थ की विविध प्रक्रियाओं की ऐतिहासिक मीमांसा**– लेखक–युधिष्ठिर मी॰। २५.००

३१. **देवापि और शान्तनु के वैदिक आख्यान का वास्तविक स्वरूप**– लेखक– श्री पं॰ ब्रह्मदत्त जिज्ञासु। ८.००

३२. **वेद और निरुक्त**– श्री पं॰ ब्रह्मदत्त जिज्ञासु। १०.००

३३. **निरुक्तकार और वेद में इतिहास**– पं॰ ब्रह्मदत्त जिज्ञासु। ५.००

३४. **त्वाष्ट्री–सरण्यू के आख्यान का वास्तविक स्वरूप**– लेखक– पं० धर्मदेव जी निरुक्ताचार्य। ५.००

३५. **वेद के आख्यानों का यथार्थ स्वरूप**–– लेखक– वैद्य रामगोपाल शास्त्री। ८.००

३६. **कतिपय वैदिक शब्दों के अर्थों की मीमांसा**– लेखक– ईश्वर चन्द्र जी विद्यासागर। ५.००

३७. **वैदिक–जीवन** – पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्त्तण्ड द्वारा अथर्ववेद के आधार पर वैदिक जीवन के सम्बन्ध में लिखा गया अत्यन्त उपयोगी स्वाध्याय योग्य ग्रन्थ। सुन्दर आकर्षक जिल्द ६०.००

३८. **वैदिक–गहस्थाश्रम**– पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्त्तण्ड द्वारा अथर्ववेद के आधार पर लिखित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ। ५०.००

३९. **वैदिक–पीयूषधारा**– लेखक– श्री देवेन्द्र कुमार कपूर। चुने हुए पचास मन्त्रों की प्रतिमन्त्र पदार्थपूर्वक विस्तत व्याख्या, अन्त में भावपूर्ण गीतों से युक्त। सुन्दर आकर्षक जिल्द ५०.००

४०. **क्या वेद में आर्यों और आदिवासियों के युद्धों का वर्णन है ?**– लेखक– श्री वैद्य रामगोपाल जी शास्त्री। १५.००

४१. **उरु–ज्योतिः**– डॉ॰ वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा लिखित वेदविषयक स्वाध्याय योग्य निबन्धों का संग्रह। ७०.००

४२. **वेदों की प्रामाणिकता**– डॉ॰ श्रीनिवास शास्त्री। ५.००

४३. **Anthology of Vedic Hymns**– स्वा॰ भूमानन्द। २००.००

४४. **Success Motivating Vedic Lores**– लेखक– श्री देवेन्द्र कुमार कपूर।५०.००

कर्मकाण्ड–विषयक ग्रन्थ

४५. **बौधायन–श्रौतसूत्रम्**–(दर्शपूर्णमास प्रकरण)– भवस्वामी तथा सायण कृत भाष्य सहित (संस्कृत)। ६०.००

४६. **बौधायन–श्रौतसूत्रम्**–(आधान प्रकरण)– सुबोधिनीवत्ति और आधान प्रक्रिया सहित (संस्कृत)। ६०.००

४७. **दर्शपूर्णमास–पद्धति**– पं० भीमसेन कृत भाषार्थ सहित। दर्शपौर्णमास समस्त श्रौतयज्ञों की प्रकृति रूप है। इसके परिज्ञान से अन्य यज्ञों की प्रक्रिया जानने में सहायता मिलती है। ५०.००

४८. **श्रौतपदार्थनिर्वचनम्**–(संस्कृत)– अग्न्याधान से अग्निष्टोम पर्यन्त अध्वर्यु ऋत्विक् सम्बन्धी यज्ञ में क्रियमाण सभी पदार्थों का विवरणात्मक ग्रन्थ। **समाप्त**

४९. **श्रौतयज्ञ–मीमांसा**–(संस्कृत–हिन्दी)– लेखक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें श्रौतयज्ञों की उत्पत्ति, प्रयोजन, उनमें परिवर्त्तन तथा पशुयज्ञों पर विस्तार से विवेचना की गई है। १००.००

५०. **अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेधपर्यन्त श्रौतयज्ञों का संक्षिप्त परिचय**– लेखक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक, डॉ॰ विजयपाल। इस ग्रन्थ में अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, सुपर्णचिति सहित सोमयाग, चातुर्मास्य और वाजपेय आदि यागों का वर्णन है। (दोनों भाग एकत्र)यन्त्रस्थ

५१. **यजुर्वेद का स्वाध्याय तथा पशुयज्ञ समीक्षा**– लेखक– पं॰ विश्वनाथ वेदोपाध्याय। २५.००

५२. **शतपथ ब्राह्मणस्थ अग्निचयनसमीक्षा**– लेखक– पं० विश्वनाथ वेदोपाध्याय। ६०.००

५३. **शतपथ के दशपथ–** (दो भाग) डॉ॰ वेदपाल सुनीथ।

प्रत्येक भाग ४०.००

५४. **दर्शपूर्णमासेष्टिरहस्यप्रकाश**– डॉ॰ वेदपाल सुनीथ। ७.००

५५. **कात्यायन-गृह्यसूत्रम्–** (मूल) ४०.००

५६. **संस्कार–विधि**– ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत। ३०.००

५७. **संस्कार–भास्कर**– संस्कार–विधि की स्वामी विद्यानन्द सरस्वती कृत व्याख्या। १५०.००

५८. **संस्कार–विधि–मण्डनम्**– वैद्य श्री रामगोपाल जी शास्त्री। संस्कार– विधि की व्याख्या। २०.००

५९. **वेदोक्त–संस्कारप्रकाश**– पं० बाला जी विट्ठल गांवस्कर द्वारा मूल मराठी में लिखे ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद। इसी का गुजराती अनुवाद संशोधित संस्कार–विधि का आधार बना। ३०.००

६०. **वैदिक–नित्यकर्मविधि**– व्याख्याकार– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। सन्ध्यादि प च महायज्ञ तथा बहद् हवन के मन्त्रों की पदार्थ तथा भावार्थ व्याख्या सहित।२०.००

६१. **वैदिक–नित्यकर्मविधि**–(मूलमात्र)– सन्ध्या तथा स्वस्तिवाचन आदि बहद् हवन के मन्त्रों सहित। ४.००

६२. **प चमहायज्ञविधि**– ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत। संस्कृत और हिन्दी भाषार्थ सहित। १५.००

६३. **सन्ध्योपासन–अग्निहोत्रविधि**–(हिन्दी–अंग्रेजी व्याख्यासहित)– अनुवादक– डॉ० विजयपाल विद्यावारिधि। १५.००

६४. **वैदिकयज्ञों का स्वरूप**– लेखक– डॉ० कृष्णलाल। ३०.००

६५. **महर्षि दयानन्द की दष्टि में कर्मकाण्ड**– लेखक– डॉ० निरूपण विद्यालंकार। ६०.००

शिक्षा–निरुक्त–व्याकरण–छन्दःशास्त्र–ज्योतिष विषयक ग्रन्थ

६६. **वर्णोच्चारण–शिक्षा**– ऋषि दयानन्द कृत हिन्दी व्याख्या। इसमें वर्णों के शुद्ध उच्चारण के लिए स्थान–प्रयत्नादि का विधान है। ४.००

६७. **शिक्षासूत्राणि**– आपिशल–पाणिनीय–चान्द्र–शिक्षा–सूत्र। १०.००

६८. **वद्धशिक्षाशास्त्रम्**–(संस्कृत)– जगदीशाचार्य। ३०.००

६९. **वर्णोच्चारण शिक्षा चिन्तनम्**– आचार्य धर्मवीर। २०.००

७०. **शिक्षा–कल्प–आर्ष–चिन्तनम्**– आचार्य धर्मवीर। २०.००

७१. **शिक्षा-महाभाष्यम्–** उदयनाचार्य यन्त्रस्थ

७२. **काशिका–महापरिष्कार**–(प्रथम खण्ड)– जगदीशाचार्य। ७०.००

७३. **निघण्टु–निर्वचनम्**– देवराजयज्वाकृत निघण्टु–व्याख्या। सम्पादक– डॉ॰ सुद्युम्नाचार्य। संशोधक– डॉ० विजयपाल विद्यावारिधि। १५०.००

७४. **निरुक्त–श्लोकवार्त्तिकम्**–(संस्कृत)– सम्पादक– डॉ० विजयपाल विद्यावारिधि। केरलदेशीय नीलकण्ठ गार्ग्य विरचित। एकमात्र मलयालम लिपि में ताडपत्र पर लिखित दुर्लभ प्रति के आधार पर मुद्रित। आरम्भ में निरुक्तशास्त्र विषयक संक्षिप्त ऐतिह्य दिया गया है। १५०.००

७५. **निरुक्त–समुच्चय**–(संस्कृत)– आचार्य वररुचि विरचित। इसमें चार कल्पों में १०० मन्त्रों की नैरुक्तप्रक्रियानुसार व्याख्या की गई है। सम्पादक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। ३०.००

७६. **निरुक्त शास्त्र**– पं॰ भगवद्दत्त जी २००.००

७७. **यास्कीय निघण्टुः श्लोकीकृतः**– आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र२५.००

७८. **अष्टाध्यायीसूत्रपाठः**–(मूल)। १५.००

७९. **अष्टाध्यायीसूत्रपाठः**–(मूल, गुटका–आकार)। १०.००

८०. **अष्टाध्यायीभाष्य**–(संस्कृत–हिन्दी)– श्री पं॰ ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत। इसके संस्कृत भाग में प्रत्येक सूत्र का पदच्छेद, विभक्ति, समास और आने वाली अनुवत्ति का निर्देश करके सरल संस्कृत में सूत्र की वत्ति और उदाहरण दिये हैं। प्रत्येक भाग के अन्त में उदाहरणों की सिद्धि की प्रक्रिया दर्शाई है।

प्रथमभाग– १५०.००, द्वितीयभाग– ९०.००, ततीयभाग– ११०.००

८१. **धातुपाठः**–(धातुसूचीसहित)। १२.००

८२. **क्षीरतरंगिणी**– क्षीरस्वामी कृत। पाणिनीय धातुपाठ की सबसेप्राचीन एवं प्रामाणिक व्याख्या। १५०.००

८३. **धातुप्रदीप**–मैत्रेयरक्षितविरचित पाणिनीय धातुपाठव्याख्या।६०.००

८४. **संस्कृत–धातु–कोष**– सम्पादक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। पाणिनीय धातुओं का हिन्दी में अर्थनिर्देश। ३०.००

८५. **संस्कृत-वाक्य-प्रबोध**– स्वामी दयानन्द सरस्वती २०.००

८६. **त्रिभाषी कोषः**(हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी)– ओंकार शास्त्री ४०.००

८७. **माधवीय–धातुवत्ति**– आचार्य सायण रचित, धातुपाठ की प्रामाणिक व्याख्या। नवीन संशोधित, शुद्धतम संस्करण। सहस्त्रों टिप्पणियों से युक्त। सम्पादक– डॉ॰ विजयपाल विद्यावारिधि। ५००.००

८८. **फिट्सूत्राष्टाध्याय्ययोः स्वरशास्त्राणां तुलनात्मकमध्ययनम्**– डॉ॰ धर्मवीर विद्यावारिधि १५०.००

८९. **पारिभाषिकः**–(संस्कृत)– व्याख्याकार– आचार्य प्रद्युम्न। व्याकरण की परिभाषाओं की प्रामाणिक, सरल व्याख्या। ६०.००

९०. **काशिका**–(मूलमात्र)– वामनजयादित्यविरचित प्रामाणिक अष्टाध्यायी– व्याख्या। नवीन संशोधित, शुद्धतम संस्करण। सहस्त्रों टिप्पणियों से युक्त। सम्पादक– डॉ॰ विजयपाल विद्यावारिधि। ५००.००

९१. **भागवत्तिसंकलनम्**– अष्टाध्यायी की प्राचीन अनुपलब्ध वत्ति के ग्रन्थान्तरों में उद्धत दो सौ उद्धरणों का संकलन किया गया है। काशिका के अनन्तर यही वत्ति प्रामाणिक मानी गई है। ३०.००

९२. **महाभाष्य**–हिन्दीव्याख्या–(द्वितीय अध्याय पर्यन्त)– व्याख्याकार– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। प्रथमभाग–प्रथमखण्ड ७५.००, द्वितीयखण्ड ७०.००, द्वितीयभाग १००.००, ततीयभाग १००.००, चतुर्थभाग– यन्त्रस्थ

९३. **संस्कृतपठन–पाठन की अनुभूत सरलतम विधि**– लेखक– श्री पं॰ ब्रह्मदत्त जिज्ञासु। इस ग्रन्थ की सरलता का अनुभव करके इसके आधार पर उत्तरप्रदेश तथा अन्य प्रदेशों के नगरों में प्रतिवर्ष अनेक शिविर आयोजित किये जाते हैं।प्रथमभाग ४०.००, द्वितीयभाग ६०.००

९४. **The Tested Easiest Method of Learning and Teaching Sanskrit (First Book)**– यह पुस्तक श्री पं॰ ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी कृत 'संस्कृतपठन–पाठन की अनुभूत सरलतम विधि' के प्रथमभाग का अंग्रेजी अनुवाद है। अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पाणिनीय व्याकरण में प्रवेशकरने वालों के लिए यह आधिकारिक पुस्तक है। १५०.००

९५. **उणादिकोष**– प चपादी उणादि सूत्रों की ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत व्याख्या तथा पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक कृत टिप्पणियों एवं ११ सूचियों सहित। ५०.००

९६. **दशपाद्युणादिवत्ति–संग्रह**– प्रथमभाग में अतिप्राचीन माणिक्यदेव विरचित वत्ति है। इस पर व्याकरणादि शास्त्रों से सम्बद्ध शतशः टिप्पणियां तथा अन्त में सूत्र, प्रत्यय एवं शब्द सूचियां दी हैं। सम्पादक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक, चन्द्रदत्त शर्मा। ६०.००

९७. **दशपाद्युणादिवत्ति–संग्रह**– द्वितीयभाग में दो अज्ञातनामा वत्तिकारों की वत्तियां तथा विट्ठलाचार्य कृत वत्ति दी गई है। सम्पादक– चन्द्रदत्त शर्मा। ६०.००

९८. **गणरत्नावली**–(संस्कृत)– भट्टयज्ञेश्वरकृत पाणिनीय गणपाठ की व्याख्या। सम्पादक– चन्द्रदत्त शर्मा। ७५.००

९९. **वामनीयं लिंगानुशासनम्**– वामनदेव–स्वोपज्ञव्याख्या सहित। इसमें केवल संस्कृत भाषा के शब्दों का लिंग बताया गया है। व्याख्या पाणिनीय व्याकरणानुसार है। १५.००

१००. **दैवम्, पुरुषकार–वार्त्तिकोपेतम्**– लीलाशुक मुनि कृत। इसमें पाणिनीय धातुपाठ में जो धातु अनेक गणों में पढ़ी हैं, उन पर विचार किया गया है।२५.००

१०१. **अष्टाध्यायीशुक्लयजुःप्रातिशाख्ययोर्मतविमर्शः**– (संस्कृत)– डॉ॰ विजयपाल विद्यावारिधि विरचित पी॰एच॰डी॰ का महत्त्वपूर्ण शोध प्रबन्ध। ६०.००

१०२. **शब्दरूपावली**– बिना रटे शब्दरूपों का ज्ञान कराने वाली। लेखक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। ८.००

१०३. **पिंगलनागछन्दोविचितिभाष्यम्**– यादव प्रकाश द्वारा विरचित भाष्य। इसकी प्रमुख विशेषता है कि इसमें छन्दों के जो उदाहरण दिए हैं वे अश्लीलता के दोष से रहित हैं। अतः गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों के लिए यह पुस्तक परम उपयोगी है। ६०.००

१०४. **काशकृत्स्न–व्याकरणम्**–पाणिनि से प्राचीन काशकृत्स्न–व्याकरण के उपलब्ध १५३ सूत्रों की संस्कृत में विस्तत व्याख्या। सम्पादक एवंव्याख्याता– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। २०.००

१०५.**संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास**– लेखक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें पाणिनि से प्राचीन २३ वैयाकरणों, तथा उससे उत्तरवर्त्ती १८ वैयाकरणों, उन पर टीका–टिप्पणी लिखने वाले १०० से भी अधिक व्याख्याताओं का इतिहास लिखा है। तत्पश्चात् सभी व्याकरणों के धातुपाठ, उणादिसूत्र, लिंगानुशासन, परिभाषापाठ आदि के प्रवक्ताओं, व्याख्याताओं, व्याकरण के दार्शनिक तथा काव्यप्रणेता वैयाकरणों का इतिवत्त दिया गया है। प्रथमभाग २००.००, द्वितीयभाग २००.००

१०६. **प्रश्नोत्तर–म जरी**– आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र। १०.००

अध्यात्म–विषयक ग्रन्थ

१०७. **ईश–केन–कठ–उपनिषद्**–श्री वैद्य रामगोपाल शास्त्री कृत हिन्दी–अंग्रेजी व्याख्या सहित। क्रमशः– ३.००, ३.००, २०.००

१०८. **उपनिषज्ज्ञानज्योतिः**– आचार्य विष्णु चैतन्य १२०.००

१०९. **श्रीमद्गीताभाष्यम्**– भाष्यकार– पं॰ तुलसीराम स्वामी। २५.००

११०. **तत्त्वमसि अथवा अद्वैत मीमांसा**– लेखक– स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों मूल तत्त्वों का प्रतिपादन करने वाला दार्शनिक ग्रन्थ। १००.००

१११. **प्रप च–हृदयम् तथा प्रस्थान–भेदः**–(संस्कृत)– प्रथम– अज्ञातकर्त्तक 'प्रप च–हृदय' में वैदिक वाङ्मय का संक्षिप्त सारगर्भित परिचय, द्वितीय ग्रन्थ मधुसूदन सरस्वतीकृत प्रस्थान–भेद में दर्शनों का संक्षेप में परिचय दिया है। २५.००

११२. **ध्यानयोग–प्रकाश**– स्वामी दयानन्द सरस्वती के योग विद्या के शिष्य स्वामी लक्ष्मणानन्द कृत। ४०.००

११३. **पुरुषार्थप्रकाश**– स्वा॰ विश्वेश्वरानन्द, ब्र० नित्यानन्दकृत।५०.००

११४. **अनासक्तियोग–मोक्ष की पगदण्डी**– लेखक– श्री पं॰ जगन्नाथ पथिक। १००.००

११५. **आर्याभिविनय**–(हिन्दी)– ऋषि दयानन्द सरस्वती। १०.००

११६. **Aryabhivinaya**– English Translation & notes– स्वामी भूमानन्द सरस्वती। १०.००

११७. **वैदिक–ईश्वरोपासना**– (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से संकलित)८.००

११८. **विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्**–(सत्यभाष्यसहितम्)– पं॰ सत्यदेव वासिष्ठकृत संस्कृत और हिन्दी में विस्तत आध्यात्मिक वैदिक भाष्य। (चार भाग में) प्रतिभाग १००.००, सम्पूर्ण ४००.००

११९. **सन्ध्या से समाधि**– लेखक– स्वामी वेदानन्द सरस्वती।१३०.००

१२०. **त्रैतसिद्धान्तादर्श**– पं॰ शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ १५०.००

१२१. **The Riddle of Life and Death**– लेखक– स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। २०.००

१२२. **जन्म–जीवन–मत्यु**– लेखक– स्वामी विद्यानन्द सरस्वती।३०.००

१२३. **गीता सुमन**– टीकाकार– वैद्य रामगोपाल शास्त्री। ८.००

१२४. **अगम्य पन्थ के यात्री को आत्मदर्शन**– च चल बहिन।५०.००

१२५. **आत्मा की जीवनगाथा**– श्री कर्मनारायण कपूर। ८.००

१२६. **मानवता की ओर**– श्री शान्ति स्वरूप कपूर के विविध विचारोत्तेजक सरल भाषा में लिखे गए लेखों का संग्रह। ८.००

१२७. **विचार–सौरभ**– श्रीमती शन्नो भाटिया।
प्रथमभाग १५.००, द्वितीयभाग १५.००

१२८. **ज्ञान–गंगा**– श्रीमती शन्नो भाटिया। १५.००

१२९. **आनन्दमय पथ की ओर**– श्रीमती शन्नो भाटिया। ४०.००

१३०. **आत्मा को जानो और खुश रहो**– श्रीमती शन्नो भाटिया।३०.००

१३१. **दिव्य जीवन की राह पर**– श्रीमती सत्या पथरिया। ४०.००

१३२. **ज्ञानसुधा**– श्रीमती सत्या पथरिया। ४०.००

नीतिशास्त्र–इतिहास–विषयक ग्रन्थ

१३३. **वाल्मीकि–रामायण**– श्री पं॰ अखिलानन्द जी कृत हिन्दी अनुवाद। बाल काण्ड (अजिल्द) ५०.००, अयोध्याकाण्ड ६०.००, अरण्य– किष्किन्धाकाण्ड ११०.००, सुन्दरकाण्ड ५०.००, युद्धकाण्ड ५०.००।

१३४. **शुक्रनीतिसार**– व्याख्याकार– स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती। भारतीय राजनीति का परम प्रामाणिक ग्रन्थ। विस्तत विषयसूची तथा श्लोकसूची सहित। १००.००

१३५. **विदुरनीति**– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक कृत प्रतिपद पदार्थ और व्याख्या सहित। इसमें राजनीति व धर्मनीति दोनों का अद्‌भुत समन्वय है। ८०.००

१३६. **सत्याग्रहनीतिकाव्यम्**– आर्य समाज सत्याग्रह १९३९ ई॰ में हैदराबाद जेल में पं॰ सत्यदेव वासिष्ठ द्वारा विरचित। हिन्दी व्याख्या। ३०.००

१३७. **ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास**– लेखक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें ऋषि दयानन्द के सभी ग्रन्थों का विशद इतिहास दिया गया है। परिशिष्ट में पाण्डुलिपियों तथा अमुद्रित ग्रन्थों का विस्तत विवरण दिया है। ६०.००

१३८. **भारत के समस्त रोगों की अचूक औषध- ऋषिप्रणाली–** पं॰ ब्रह्मदत्त जिज्ञासु १०.००

१३९. **विरजानन्द–प्रकाश**– लेखक– पं॰ भीमसेन शास्त्री एम॰ए॰।८.००

१४०. **ऋषि दयानन्द सरस्वती का स्वलिखित तथा स्वकथित आत्मचरित**– सम्पादक– पं॰ भगवद्दत्त जी। ३.००

१४१. **आत्म–परिचय**–(वंशपरिचय एवं पूर्वजपरिचय सहित)– लेखक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक जी ने अपने पूर्वज, विशेष करके पिता गौरी लाल आचार्य के वैदिक धर्म के प्रचार– प्रसार में किए गए उन कार्यों का उल्लेख किया है, जिनके कारण इन्दौर राज्यप्रशासन उन्हें परेशान करता रहा। अन्त में स्वपरिचय दिया है।

वस्तुतः यह ग्रन्थ किसी वंश या व्यक्तिविशेष का परिचय मात्र ही नह है। अपितु उस समय की आर्य समाजों, शिरोमणि सभाओं, सार्वदेशिक सभा तथा आर्य समाज की विविध संस्थाओं के इतिहास का महत्त्वपूर्ण अभिलेख है। इससे उस समय के आर्य समाज के इतिहास पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। १००.००

दर्शन–आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ

१४२. **मीमांसाशाबरभाष्यम्**–(मूल–संस्कृत)– सम्पादक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। अनेक परिशिष्ट तथा टिप्पणियों से युक्त। प्रथमभाग (३ अध्याय)। ६०.००

१४३. **मीमांसाशाबरभाष्य**– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक कृत आर्षमतविमर्शिनी हिन्दी व्याख्या सहित। सात भागों में पूर्ण, पूरा सैट का मूल्य ७५०.००

१४४. **चिकित्सा–आलोक**– कृष्णदेव चैतन्य। इस ग्रन्थ में अनेक बार अनुभूत प्रामाणिक आयुर्वेदिक नुस्खों (योगों) का संग्रह किया गया है। चिकित्सकों के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपयोगी ग्रन्थ। १५०.००

१४५. **नाडीतत्त्वदर्शनम्**–(संस्कृत–हिन्दी)– पं॰ सत्यदेव वासिष्ठ। इस ग्रन्थ में नाड़ियों में होने वाले दोषों के कारण, निदान, दूत–नाड़ी से रोगी का उपचार वर्णित है। नाड़िविषयक एक सम्पूर्ण ग्रन्थ। १००.००

१४६. **पथ पथिक पाथेय**– जगदीशाचार्य १०.००

१४७. **फलों से आरोग्य प्राप्ति**– ओंकार शास्त्री। ३०.००

१४८.**स्वास्थ्य के मूलभूतसिद्धान्त**– स्वामी वेदानन्द सरस्वती।४०.००

१४९. **आहार–दर्पण**– पं० रामगोपाल शास्त्री वैद्य। ३.००

१५०. **सिद्धान्त–शतकम्**–(संस्कृत–हिन्दी)– श्री जयदत्त उप्रेती।१५.००

प्रकीर्ण–ग्रन्थ

१५१. **सत्यार्थ–प्रकाश**– दो परिशिष्ट, शतशः टिप्पणियों व सन् १८७५ के प्रथम संस्करण के विशिष्ट उद्धरणों सहित। १००.००

१५२. **सत्यार्थ–भास्कर**– लेखक– स्वामी विद्यानन्द सरस्वती– महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ–प्रकाश में वर्णित प्रत्येक सिद्धान्त–वाक्य–शब्द की पुष्टि इस ग्रन्थ में है। दो भागों मे पूर्ण–

प्रथमभाग ५००.००, द्वितीयभाग ३००.००

१५३. **मनुष्यमात्र का परममित्र स्वायम्भुव मनु**– पं० भगवद्दत्त रिसर्चस्कालर

५.००

१५४. **पाश्चात्त्य भारतविद्–उद्देश्यों का अध्ययन**– पं० भगवद्दत्त रिसर्चस्कालर। अनुवादक– श्री देवदत्त आर्य। ५.००

१५५. **भारतीय प्राचीन राजनीति**– पं० भगवद्दत्त रिसर्चस्कालर।६.००

१५६. **हिन्दुओं का भविष्य**– डॉ॰ हरिश्चन्द्र। ३.००

१५७. **आश्वलायनसूत्रप्रयोगदीपिका**– सम्पादक– ब्र॰ धर्मवीर विद्या– वारिधि। इसमें आश्वलायन श्रौतसूत्रानुसार श्री म चनाचार्य ने श्रौतयागों में दर्शपूर्णमासेष्टि से लेकर अश्वमेधादि यज्ञों का संस्कृत में विवेचन किया है। परिशिष्ट एवं टिप्पणियों से युक्त। १००.००

१५८. **ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन**– सम्पादक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें ऋषि दयानन्द के उपलब्ध पत्र और विज्ञापन संगहीत किये गए हैं। यह संग्रह चार भागों में छपा है। प्रथम दो भागों में ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन आदि संगहीत हैं। तीसरे–चौथे भाग में विविध व्यक्तियों द्वारा ऋषि दयानन्द को लिखे गए पत्रों का संग्रह है।**द्वितीय संस्करण**– नया संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण मूल्य– प्रथमभाग १२५.००, द्वितीयभाग १००.००, ततीयभाग १२५.००, चतुर्थभाग ८०.००

१५९. **भागवतखण्डनम्**–(भाषार्थसहित)– ऋषि दयानन्द की प्रथम कृति। अनुवादक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। ८.००

१६०. **जगद्गुरु दयानन्द का संसार पर जादू**– श्रीमेहताजैमिनि।३.००

१६१. **व्यवहारभानु**– ऋषि दयानन्द कृत। (प्रचारार्थ) ६.००

१६२. **आर्योद्देश्यरत्नमाला**– ऋषि दयानन्द कृत। ३.००

१६३. **कन्योपनयनविधि**– अर्थात् 'कन्योपनयन–प्रतिषेध' ग्रन्थ का खण्डन। श्री पं॰ महाराणी शंकर। अपने विषय की सुन्दर, सामयिक पुस्तक।६.००

१६४. **ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से सम्बद्ध कतिपय महत्त्वपूर्ण अभिलेख**– इसमें ऋ॰ द॰ के नए उपलब्ध पत्र, मुम्बई आर्यसमाज के आदिम २८ नियमों की ऋ॰ द॰कृत व्याख्या, पं॰ गोपाल राव हरि देश मुख लिखित दयानन्द चरित मराठी एवम् आर्यसमाज काकड़वाड़ी मुम्बई की पुरानी गुजराती में लिखित कार्यवाही का हिन्दी रूपान्तर है। २०.००

१६५. **मेरी दष्टि में ऋषि दयानन्द और उनके कार्य**– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक का सम्पूर्ण जीवन ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के अध्ययन– सम्पादन–विवेचन और प्रकाशन में बीता है। आपकी

अनुभव–परिपुष्ट दष्टि ने ऋषि दयानन्द और उनके कार्य को किस रूप में देखा, समझा है, इसका विस्तत निरूपण इस ग्रन्थ में किया गया है।

प्रथम सं॰ ५०.००, द्वितीय सं॰ १००.००

१६६. **अथ शास्त्रार्थ और सद्धर्मविचार**-ऐतिहासिक काशीशास्त्रार्थ३.००

१६७. **भारत के समस्त रोगों की अचूक औषध ऋषि-प्रणाली**– श्री पं॰ ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने इस लघु पुस्तिका के माध्यम से आज राष्ट्र में व्याप्त अत्याचार, दुराचार, बलात्कार, बेइमानी, लूट–खसोट, राजनीतिक अस्थिरता, चारित्रिक पतन आदि असाध्य राष्ट्रीय रोगों की एक मात्र औषध आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन–अध्यापन को बताया है। १०.००

१६८. **जिज्ञासु–रचना–म जरी**–(प्रथमभाग)– १५ अक्टूबर १६६२ से १३ अक्टूबर १६६३ वर्ष में आयोजित गुरुवर स्व॰ पं॰ ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु जन्म–शताब्दी के अवसर पर उनके लघु ग्रन्थों को इस भाग में इकट्ठाप्रकाशित किया है। ८०.००

१६९. **जिज्ञासु–रचना–म जरी**–(द्वितीयभाग)– इसमें जिज्ञासु जी के उपलब्ध समस्त लेख व वेदवाणी के लिए विभिन्न समयों पर लिखे गए सम्पादकीय तथा भूमिकाएँ भी संगहीत हैं। १००.००

१७०. **आर्य समाज के दिग्गज विद्वानों का शास्त्रार्थ**– यह शास्त्रार्थ 'वेद में इतिहास है वा नह' विषय पर लाहौर में महात्मा हंसराज जी के सभापतित्व में हुआ था।२५.००

१७१. **दयानन्द–शात्रार्थ–संग्रह**– ४०.००

१७२. **दयानन्द–प्रवचन–संग्रह**–(पूना–मुम्बई प्रवचन) ४०.००

१७३. **अष्टोत्तरशतनाममालिका**– लेखक– पं॰ विद्यासागर शास्त्री। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास की सुन्दर प्रामाणिक व्याख्या। ५०.००

१७४. **ऋषि दयानन्द की पदप्रयोग शैली**– लेखक– पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें ऋषि दयानन्द के यजुर्वेद–भाष्य में प्रयुक्त कतिपय ऐसे शब्दों जिन्हें आधुनिक वैयाकरण अशुद्ध मानते हैं, पर पाणिनीय दष्टि से विचार किया है। १६.००

१७५. **प्यारा ऋषि**– श्री आनन्द स्वामी जी। ऋषि दयानन्द के जीवन की प्रेरणाप्रद घटनाएँ। १०.००

१७६. **पाथेयम्**–(संस्कृत)– जगदीशाचार्य। ३०.००

१७७. **अभूतपूर्वानुसन्धानत्रयी**–(संस्कृत)– जगदीशाचार्य। २५.००

१७८. **दयानन्द अंक** (२)– इसमें ऋषि दयानन्द के नये उपलब्ध पत्र, पत्रांश जो पहले नह छपे थे तथा एक जाली पत्र और उसकी विवेचना, ऋषि दयानन्द के जीवन से सम्बद्ध अज्ञात वा अप्रकाशित घटनाएं, ऋषि दयानन्द के सहयोगी महाराष्ट्रिय विशिष्ट व्यक्तियों का मराठी से अनूदित परिचय आदि अनेक विषयों का सन्निवेश किया गया है। १५.००

१७९. **दयानन्द अंक** (३)– इसमें टंकारा निवासी प्रा॰ श्री दयालभाई ने ऋषि दयानन्द के प्रारम्भिक जीवन के सम्बन्ध में अनेक वर्षों के अनुसन्धान के पश्चात् प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किया है, और अनेक पुरानी भूलों का निराकरण किया है। डॉ॰ भवानीलाल भारतीय द्वारा ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में थियोसोफिकल सोसाइटी की थियोसोफिस्ट पत्रिका में जो वत्तान्त उपलब्ध हुआ है, उस सबका हिन्दी भाषा मेंअनूदित विवरण प्रथम बार हिन्दी में छापा गया है। १५.००

१८०. **दयानन्द अंक** (४)– इसमें कुछ नये उपलब्ध पत्र और ऋषि दयानन्द के जीवन से सम्बद्ध महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन है।१५.००

१८१. **दयानन्द अंक** (५)– इसमें ऋषि दयानन्द के उपलब्ध ५० पत्र तथा अनेक पूर्व अज्ञात तथ्यों का संग्रह किया है। १५.००

१८२. **दयानन्द अंक** (६)– इसमें जी॰ वाईज़ तथा विभिन्न व्यक्तियों द्वारा ऋषि दयानन्द को लिखे गए पत्र तथा मैडम ब्लैवेट्स्की के ऋषि दयानन्द विषयक संस्मरण, दो महत्त्वपूर्ण पत्र, लाला भक्त व सायला से सम्बद्ध चित्रों का संग्रह भी किया गया है। २०.०० १८३. **दयानन्द अंक** (७)– इस महत्त्वपूर्ण अंक में सुप्रसिद्ध प्रामाणिक विद्वान् लेखकों के द्वारा पुष्ट प्रमाणों के आधार पर लिखित महर्षि दयानन्द के जन्म तथा निधन सम्बधी सामग्री एवं कुछ आवश्यक पत्रों का संग्रह है। १५.००

१८४. **दयानन्द अंक** (८)– वेदवाणी के इस अंक में स्वामी दयानन्द पर लिखे गए महाकाव्यों तथा खण्डकाव्यों का ऋषि दयानन्द वाङ्मय के प्रामाणिक लेखक डॉ॰ भवानीलाल भारतीय द्वारा साहित्यिक मूल्यांकन प्रस्तुत है। १५.००

विशेष– दयानन्द अंक १ से ८ तक वेदवाणी–विशेषांक के रूप में संवत् २०५०–५८ में क्रमशः छपे हैं। ऋषि दयानन्द के जीवन–चरित्र पर कार्य करने वाले भावी विद्वानों के लिए बड़े उपयोगी हैं। ये बहुत सीमित संख्या में छपवाये गए हैं। प्रथम अंक समाप्त हो चुका है।

१८५. **वेदवाणी स्वर्णजयन्ती वेद–परिशीलन विशेषांक**– वेदवाणी का स्वर्णजयन्ती अंक। वेदविषयक महत्त्वपूर्ण लेखों का संग्रह। ६०.००

१८६. **वेदवाणी उपनिषद्–विशेषांक**– उपनिषद्–विषयक महत्त्वपूर्ण लेखों का संग्रह। अंक प्रथम/द्वितीय, मूल्य प्रत्येक १२.००

१८७. **जिज्ञासु–स्मति–अंक**– इस अंक में गुरुवर पं॰ ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु से सम्बन्धित संस्मरण एवं उनके प्रति विशिष्ट विद्वानों द्वारा लिखित श्रद्धा जलियों के संग्रह के अतिरिक्त श्री जिज्ञासु जी द्वारा अपने स्वाध्याय एवं अनुभव के आधार पर लिखा गया 'वेदार्थ–प्रक्रिया के मूलभूत सिद्धान्त' नामक लेख भी संगहीत है। ३०.००

१८८. **पं॰ भगवद्दत्त–विशेषांक**– पं॰ भगवद्दत्त जी के संस्मरणों के अतिरिक्त उनके कई वेदादि शास्त्रों से सम्बद्ध लेखों का भी संग्रह। २५.००

१८९. **पं॰ युधिष्ठिर जी मीमांसक संस्मरण–विशेषांक**– इस अंक में पं॰ युधिष्ठिर जी से सम्बन्धित संस्मरण एवं उनके शिष्यों–प्रशिष्यों तथा अन्य विद्वानों द्वारा लिखित पं॰ जी के कुछ ऐतिहासिक अति महत्त्वपूर्ण पत्रों का भी संकलन है। २५.००

१९०. **यज्ञ–विशेषांक**– इसमें आर्यसमाज में प्रचलित तथा अन्य यज्ञों के विषय में भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों के गम्भीर चिन्तन एवं गवेषणा तथा शंका–समाधन से युक्त २५ निबन्धों का संग्रह है। २५.००

१९१. **वैदिक नारी–विशेषांक**– नारी के विषय में सामाजिक चिन्तकों में किसी ने नरक का द्वार कहा तो किसी ने पूज्य कहा। वेद एवं अन्य वैदिक वाङ्मय में नारी के गुण, स्वरूप एवं स्तुति किस रूप में है इसी विषय पर इसमें २२ उत्कृष्ट निबन्धों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है।२०.००

१९२. **वैदिक वर्ण-व्यवस्था विशेषांक**– वर्ण-व्यवस्था के विषय में समाज में अनेक भ्रान्तियां प्रचलित रही हैं। चारों वर्णों के कर्मों को लेकर भी परस्पर मतभेद दृष्टिगोचर होते हैं। उन सभी भ्रान्तियों एवं मतभेदों

का भारत के सुविख्यात वैदिक विद्वानों के द्वारा वैदिक वाङ्मय के आधार पर २८ लेखों के माध्यम से सप्रमाण विवेचन प्रस्तुत किया गया है। ३०.००

१९३. **वैदिक आश्रम-व्यवस्था विशेषांक**– आश्रम-व्यवस्था के विषय में समाज में अनेक भ्रान्तियां प्रचलित रही हैं। चारो आश्रमों के कर्मों एवं क्रम को लेकर भी परस्पर मतभेद दृष्टिगोचर होते हैं। उन सभी भ्रान्तियों एवं मतभेदों का भारत के सुविख्यात वैदिक विद्वानों के द्वारा वैदिक वाङ्मय के आधार पर २३ लेखों के माध्यम से सप्रमाण विवेचन प्रस्तुत किया गया है। २५.००

पुस्तकें भेजने के कुछ आवश्यक नियम

१. व्यक्तिगत ग्राहकों को १००.०० रुपये से अधिक की हमारे प्रकाशन की पुस्तकें लेने पर पन्द्रह प्रतिशत की छूट। वाछित पुस्तकों के छपे मूल्य का २५ प्रतिशत मूल्य आदेश के साथ अग्रिम भेजना होगा।

२. पुस्तकें वी॰पी॰पी॰ द्वारा भेजी जायेंगी। वी॰पी॰पी॰ पोस्ट ऑफिस से पाँच दिन बाद लौटा दी जाती है। इस अवधि के भीतर वी॰पी॰पी॰ छुड़ाएं, अन्यथा सारे खर्च की जिम्मेदारी ग्राहक की होगी।

३. मनीआर्डर के कूपन पर अपना नाम व पूरा पता लिखना न भूलें।

४. वी॰पी॰ में भूल जान पड़े तो भी वी॰पी॰ वापिस न करें। पत्र लिखने पर भूल सुधार दी जायेगी।

५. हमारे यहाँ से पूरी जाँच के बाद ही माल भेजा जाता है इसलिए डाक, रेल या ट्रांसपोर्ट में खोई पुस्तक का उत्तरदायी ट्रस्ट नह होगा।

६. साधारणतया हम ट्रांसपोर्ट रसीद वी॰पी॰ द्वारा भेजते हैं, ग्राहक की इच्छानुसार रसीद बैंक द्वारा मंगाने पर बैंक से भेज दी जाती है, लेकिन समय पर ग्राहक को मिलने न मिलने का दायित्व हमारा नह होगा।

७. सभी विवाद सोनीपत न्याय–क्षेत्र के अधीन होंगे।

८. व्यापारिक पूछताछ आमन्त्रित है। पोस्टेज तथा मार्गव्यय (ट्रांसपोर्ट) व्यापारी को देना होगा।

९. क्रयादेश में अपना या अपने संस्थान का पूरा नाम, स्थान, डाकघर, बैंक का नाम व शाखा, जिला, राज्य, पिनकोड साफ लिखें।

१०. विदेश में वी॰पी॰ पी॰ नह भेजी जाती। अतः विदेशों से भेजे आर्डर के साथ–साथ मार्गव्यय सहित सम्पूर्ण मूल्य अग्रिम भेजें।